ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

जिला शाहजहाँपुर के संदर्भ में रेल का आगमन तथा विकास

Arrival and Development of Rail in The Context of District Shahjahanpur

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

विकास खुराना
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
एसएस पी.जी. कॉलेज,
शाहाजहाँपुर, भारत

सारांश

जिला शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला है,बारहवीं सदी में ही यह दिल्ली सुल्तानों के पूर्वी धावो के समय महत्वपूर्ण पड़ाव रहा था,चीनी यात्रियों के लिये भी जिला महत्वपूर्ण ट्रैक्ट बना हुआ था। आधुनिक काल मे जब संयुक्त प्रांत में रेल बिछाई गई तो यह लखनऊ सहारनपुर मार्ग पर अवध रोहिलखंड रेल का बड़ा स्टेशन बन कर उभरा,इसी प्रकार जिले के उत्तर में कुमायूं रोहिलखंड रेल का प्रसार था जो मुख्य लाइन को वाया सिंधौली तथा वाया बीसलपुर के रास्ते दो जगहों से जुड़ती है।उक्त शोध पत्र में जिले के संदर्भ में रेल की प्रगति रेखांकित की गई है।

The district Shahjahanpur is an important district of Uttar Pradesh, it was an important stop in the twelfth century during the eastern ravages of the Delhi Sultans, the district also remained an important tract for Chinese travelers. In modern times when rail was laid in the United Provinces, it emerged as a major station of the Awadh Rohilkhand rail on the Lucknow Saharanpur route, similarly there was the spread of the Kumaon Rohilkhand rail in the north of the district via the main line via Via Sindhauli and Via Bisalpur. The research paper outlines the progress of rail in the context of the district.

मुख्य शब्द : शाहजहाँपुर, रेल, इयान मैनिंग, अवध, रोहिलखंड रेल, कुमाऊँ रुहेलखंड रेल, स्ट्रीम ट्राम वे, रोजा, केरु फैक्ट्री, पुवायां लाइट इन्फेंट्री।

Shahjahanpur, Rail, Ian Manning, Awadh, Rohilkhand Rail, Kumaon Ruhelkhand Rail, Stream Tram Way, Roja, Keru Factory, Puwaian Light Infantry.

प्रस्तावना

भारत मे रेल का इतिहास औपनिवेशिक स्वार्थो की सिद्धि से जुड़ा है।वस्तुत इनका बिछाया जाना मैनचेस्टर और लिवरपूल के कारखानों में बने माल को भारत के दूर दराज के इलाके में पहुंचाने और उनके लिये कच्चे माल का प्रबन्ध था किंतु जैसे की कोई अभिशाप वरदान में बदल गया हो,इसी रेल ने भारत मे राष्ट्रीयता का द्रुत गति से संचार किया ऐसा नही कि तत्कालीन अंग्रेज विद्धवान इसके निहितार्थ से अनभिज्ञ थे उनमें से एक पर्सिवियल स्फीयर ने कहा था कि रेल भारत मे वो कार्य कर देंगी जो अकबर मि उदारता और टीपू की तलवार नही कर पाई यानी कि अब भारत को एक राष्ट्र बनने से कोई नही रोक सकता इसी प्रकार मॉरिस दी मॉरिस ने गर्भाधिकारण का सिद्धांत दिया जिसके अंतर्गत भारत को तब तक गर्भ में रखा गया जब तक वो राष्ट्र नही बन गया,रेल का विकास इसमे अग्रणी थी। जहां तक जिला शाहजहाँपुर की बात है तो यहां रेल का विकास दो रूपो में हुआ एक अवध रुहेलखण्ड कम्पनी द्वारा बिछाई गई लखनऊ सहारनपुर मुख्य लाइन और दूसरा कुमायूं रुहेलखण्ड छोटी लाइन के रूप में जो जिले के उत्तर में फैली है और जिसका एक एक्सटेंशन पीलीभीत से शाहजहाँपुर तक है। मुख्य लाइन 1 मार्च 1873 को खोली गई द्यततपश्चात 8 सितम्बर को यह फरीदपुर तक बढ़ाई गई।शाहजहाँपुर परगने में यह दक्षिण दिशा में कहिलिया तथा रोजा होते हुए प्रवेश करती है। इसकी एक शाखा मैसर्स कैरू एन्ड कम्पनी द्वारा बिछाई गई जो रोजा जंक्शन से रोजा फैक्ट्री तक जाती है

तथा यह शहर के पश्चिम हिस्से की सीमा बनाती है जिसके दूसरी तरफ कैंट का विस्तार है। उत्तर पश्चिम दिशा में यह लाइन बंथरा,तिलहर,कटरा होते हुए जिले को छोड़ देती है। बहगुल पुल की शाहजहाँपुर कैंट से दूरी 35 मील है।शाहजहाँपुर स्टेशन पर पहले दो शेड्स थे तथा तिलहर में एक। वर्तमान समय मे यह स्टेशन भारतीय रेल के ए श्रेणी कब स्टेशन में शुमार है,लॉक डाउन से पूर्व यहां से 200 से अधिक गाड़िया गुजरती थी तथा 15000 यात्री टिकट बिकते थे।यह लाइन खनौत को लोहे के पुल से काटती है,इसकी ऊंचाई 22 फीट है जो सामान्य दिनों में सतह से नापी गयी है।पिलर चालीस फीट नीचे धसे है।गर्रा का पुल भी इसी के समान है किन्तु इसके पिलर की गहराई 70 से 80 फीट है तथा बहगुल के पिलर की गहराई 45 फीट तक है।

रेल का दूसरा विस्तार लखनऊ–सीतापुर–बरेली की स्टेट रेल का विस्तार है जो गोला से पीलीभीत चलती है।यह जिले के उत्तर पूर्व में बिछी तथा अप्रैल 1891 में खोली गई।यह जिले के खुटार परगना से गुजरती है जहां उत्तरी सेहरामऊ तथा जोगराजपुरा दो स्टेशन है। यद्यपि यह लाइन छोटी लाइन थी किन्तु पुवायां परगने के लिए अपार महत्व की रही।करीबी जंगलों से लकड़ी की ढुलाई तथा चीनी एवं अन्य सामानों की प्रतिपूर्ति में विशेष भूमिका निभाती थी।यह लाइन पुवायां लाइट रेल द्वारा अवध रुहेलखण्ड मुख्य लाइन से जुड़ती है। पुवायां स्ट्रीट ट्राम लाइन अप्रैल 1887 में बिछाई गई इसके लिये शाहजहाँपुर के सात नागरिकों द्वारा चार लाख रुपये दिए गए।लाइन 2श्6 गेज की थी और 17 जून 1890 को खोल दी गयी ।19 मई 1891 को इसका एक एक्सटेंशन खुटार खुला जबकि खुटार से मैलानी 22 दिसम्बर 1895 को खोला गया।मूल राशि 294500 रुपये थी जो बाद में बढ़कर 446375 हो गयी।बाद में इसका मेन्टेन्स रुहेलखण्ड कुमायूं रेल ने ले लिया। यह लाइन पुवायां रोड के साथ साथ बिछाई गई थी जो खनौत को रोड ब्रिज से ही काटती थी। इसके मध्यवर्ती स्टेशनों में कोरोकुइया, बड़ागांव, गंगसरा, गुटाइय्या घाट, खुटार थे। यह रेल 1914 तक द्रुत गति से चलती रही बाद में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ जाने पर यह लाइन उखाड़ कर मेसोपोटामिया ले जाई गयी,1922 में एक बार पुनः इसको शुरू करने के प्रयास हुए किन्तु आर्थिक दृष्टि से घाटा समझ कर छोड़ दिये गए । रेल का एक अन्य मार्ग पीलीभीत से शाहजहाँपुर था जो वर्ष 1911 में खुला,इसी रास्ते से ऑस्ट्रेलिया इयान मैनिंग शाहजहाँपुर आया था जिसके यात्रा व्रतांत को उसके मरने के बाद उसके घर वालो ने भारतीय रेल को सौंपा था जिससे तत्कालीन शाहजहाँपुर के बारे में रोचक जानकारी मिलती है।यह लाइन मुख्य लाइन को काटती हुई केरूगंज स्टेशन तक जाती थी। रेल की बहुप्रतीक्षित योजना रोजा सीतापुर तथा बदायूं,फरुखाबाद तक रेल ले जाने की थी इनमे से प्रथम 1911 तक खुल गयी जबकि शेष के प्रयास छोड़ दिये गए।

अध्ययन का उद्देश्य .

भारतीय इतिहास में रेल के विकास एवं प्रसार के संदर्भ में काफी कम कार्य हुआ है।यह तब तक पूर्ण नही हो पायेगा जब तक जिला एवं तहसील स्तर तक हुए रेल एक्सटेंशन को क्रमबद्ध नही किया जाएगा। इसी उद्देश्य के साथ जिला शाहजहाँपुर में रेल के विकास एवं प्रसार पर उक्त कार्य किया गया। जिला शाहजहाँपुर में रेल का प्रसार अवध, रोहिलखंड बड़ी लाइन तथा कुमाऊँ, रोहिलखंड छोटी लाइन से सम्बद्ध रहा।इसके अतिरिक्त पुवायां लाइट इन्फेंट्री के रूप में स्ट्रीम ट्राम अलग से कार्य कर रही थीएइनका विशद वर्णन शोध पत्र में प्रस्तावित है।

निष्कर्ष

आज शाहजहाँपुर स्टेशन भारतीय रेल का '।' ग्रेड स्टेशन है, यहाँ से 208 ट्रेन रोजाना गुजरती है। छोटी लाइन अमान परिवर्तन का काम भी बहुत तेजी स्व चल रहा है,आने वाले समय मे छोटी लाइन स्टेशन खत्म करके इसका जंक्शन बड़ी लाइन स्टेशन पर बनाये जाने की योजना है तब शाहजहाँपुर स्टेशन का नाम शाहजहाँपुर जंक्शन हो जाएगा। स्वचलित सीढ़ियों, बड़े राष्ट्रीय ध्वज लगाए जाने की योजना पर कार्य चल रहा है। 1922 के बाद बन्द हुई पुवायां लाइट रेल की पटरी को पुनः बिछाये जाने को लेकर आवाज उठ रही है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *इयान मैनिंग – द रोहिलखंड एंड कुमाऊँ रेल*
2. *एक्सट्रेक्ट ऑफ रेल बजट ,2012–13*
3. *अवध एंड रोहिलखंड रेलवेज,मैनजमेंट ई बुक्स,2014*
4. *ग्रेस गाइड – अल्केजेंडर इज्जत*
5. *एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट आन दी रेलवेज इन इंडिया, मार्च 31,1918*
6. *शाहजहाँपुर गजेटियर,1909 रू एच आर नेविल्स*